28 सोचने की कार्यशाला

करिश्मा अजमेरा
राहुल अजमेरा

यहाँ बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे एक ही समस्या को हल करने के लिए कई तरीकों के बारे में सोचें ।

उन दिनों मैं अहमदाबाद के नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन में पढ़ रही थी और अहिंसा एक्सप्रेस से वहीं जा रही थी। मेरे सहयात्री ने मुझसे पूछा कि मैंने डिजाइन की पढ़ाई करने का फैसला क्यों किया। "क्योंकि मैं इंजीनियरिंग नहीं करना चाहती थी"—मैंने रूखा—सा उत्तर दिया और हमारी बातचीत वहीं समाप्त हो गई।

यात्रा के अगले कुछ घण्टे मैं अपने इस कथन के बारे में सोचती रही। क्या यह बात सच थी? क्या अपने करियर के बारे में मेरा यह फैसला अलग—थलग रहने की प्रक्रिया का परिणाम था?

मेरे 11 करीबी दोस्तों में से आठ ने इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला लिया था। नौवें ने मेडिकल का कोर्स चुना और दसवें ने आर्मी में जाने का फैसला किया। मैंने डिजाइन को क्यों चुना? क्या इंजीनियरिंग के प्रति अरुचि ने मुझे डिजाइन की ओर प्रेरित किया? वह कौन—सा प्रभाव था जिसके कारण मैंने यह फैसला लिया?

मैं जिस स्कूल में पढ़ती थी वहाँ अकादमिक बातों पर बहुत ध्यान दिया जाता था। बच्चों को उनके अकादमिक प्रदर्शन के अनुसार ए, बी और सी विभागों में बाँटा जाता था और ए विभाग में अव्वल दर्जे के विद्यार्थियों को रखा जाता था। स्कूल में निश्चित रूप से ऐसा कोई उत्प्रेरक नहीं था जिसने रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करने में मेरी मदद की हो। कम से कम सीधे—सीधे तो नहीं। शायद संगीत की कक्षा ने दाएँ मस्तिष्क को उकसाया, बस, इससे ज्यादा शायद कुछ नहीं। मेरी माँ कला में रुचि रखती थीं और इसे लेकर उनके मन में उत्साह भी था। तो मैंने भी यह बात मान ली कि इसी कारण मैंने भी कला को चुना।

अब एन.आई.डी. से उत्तीर्ण होने और दो बच्चों की माँ बनने के बाद जब मैं मुड़कर पीछे देखती हूँ तो अपनी शिक्षा प्रणाली की कमियों का पता चलता है; पहली कमी है रचनात्मक क्षेत्र में करियर सम्बन्धी मार्गदर्शन की कमी। अधिकांश माता—पिता और शिक्षकों को उन पेशों के बारे में कम ही पता होता है जो दाएँ मस्तिष्क को प्रेरित करते हैं जैसे भवन—निर्माण कला, फिल्म निर्माण या संगीत रचना। उन्हें ऐसे कॉलेजों और डिजाइन स्कूलों के बारे में भी पता नहीं होता जो इन प्रतिभाओं को विकसित करते हैं। डिजाइन स्कूल में पढ़ने के कारण मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे बहुत से विद्यार्थियों को जानती हूँ जिन्हें इस स्कूल में आने के पहले डिजाइन के क्षेत्र के बारे में कुछ पता नहीं था। मेरे कई साथी एन.आई.डी. में संयोग से आ गए थे।

स्कूलों में एक और बात की कमी है और वह है रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए इनपुट देने का प्रावधान न होना। यहाँ इस बात से भ्रमित नहीं हो जाना चाहिए कि रचनात्मकता का मतलब चीजों को सुन्दर बनाना है, वास्तव में यह तो सोचने का एक तरीका है।

रचनात्मक सोच वास्तविकता को समीक्षात्मक रूप से देखने, अपरम्परागत विकल्प तलाशने, और नवीन दृष्टिकोण से स्थितियों को जानने से जुड़ी हुई है (Csikszentmihalyi]

1997)। रचनात्मक सोच नवीन रूप से समस्या को हल करने से सम्बन्धित संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को अंगीकार करती है।

स्कूल में ऐसी कक्षाएँ कम ही थीं जिनमें मुझे रचनात्मक बनने की जरूरत महसूस हुई हो फिर चाहे वह गणित के सवाल हल करने की बात हो या कोई रासायनिक समीकरण। हाँ, चित्रकला और क्राफ्ट की कक्षाएँ ऐसी थीं जो जिनमें रचनात्मकता की थोड़ी बहुत जरूरत पड़ती थी। इन कक्षाओं में हम कागज काटकर सुन्दर कलाकृतियाँ बनाने की कोशिश करते थे लेकिन इनसे भी हम समस्या का हल नवीन रूप से करना नहीं सीख पाते थे।

इन कमियों को दूर करने का हमारे पास तत्काल कोई हल नहीं है हालाँकि पहली समस्या का हल प्राप्त करना जरा आसान लगता है। बच्चों को बेहतर मार्गदर्शन और सलाह दी जा सकती है, उन्हें पेशे सम्बन्धी ऐसे अनेक विकल्पों से अवगत कराया जा सकता है जो उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रखर कर सकें। हो सकता है इस प्रकार की सलाह इस बात पर प्रकाश डाल सके कि सफल डिजाइनर, आर्किटेक्ट और कलाकार भी इंजीनियरों और डॉक्टरों के समतुल्य जीवन शैली का आनन्द उठा सकते हैं। लम्बे समय से विद्यार्थियों और माता–पिता के मन में रचनात्मक क्षेत्रों को लेकर जिस उपेक्षा और असहजता का भाव बैठा हुआ है, उसे दूर करना जरूरी है। ये लोग मानते हैं कि रचनात्मक क्षेत्र संघर्ष करने वालों और सपने देखने वालों से भरा हुआ है।

दूसरी समस्या यानी स्कूलों में रचनात्मकता का समावेश करने लिए दो तरीकों को बढ़ावा दिया जा सकता है। एक तो यह कि रचनात्मकता रूप से समस्या को सुलझाने पर बल देते हुए अलग से पाठ पढ़ाए जाएँ। या दूसरा तरीका यह हो सकता है कि कोर्स के विषयों के माध्यम से ही ऐसा करवाया जाए। शिक्षक इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि वे अपने ही विषय के अन्तर्गत डिजाइन का तत्व कैसे लाएँ। उदाहरण के लिए हम नागरिक शास्त्र को ले सकते हैं। मुझे यह विषय जिस तरह से पढ़ाया गया था वह बहुत ही सीधा–सरल था; मुझे रटकर उन कानूनों और अधिनियमों को याद करना पड़ता था जो भारत की आजादी के दौरान लागू किए गए थे। हमारे सामने यह बात उजागर नहीं की गई थी कि उस समय के सन्दर्भ या परिस्थितियाँ कैसी थीं जिनके तहत ये कानून बनाए गए थे। हमें यह बात सिखाई ही नहीं गई कि उस समय बनाया गया हर कानून समस्या को सुलझाने का ही परिणाम था, चाहे वह समस्या तात्कलिक हो या दूर की।

पर अगर बच्चों को नीति निर्माताओं के स्थान पर रख दिया जाता तो क्या होता? उन्होंने इस समस्या का समाधान कैसे किया होता? क्या वे उन्हीं मुद्दों को किसी और नजरिए से देख पाते? तो फिर उनके बनाए हुए कानून इन बने हुए कानूनों से किस प्रकार से अलग होते; और ये कानून कुछेक वर्षों में भारतीय समाज को किस प्रकार से प्रभावित करते? कक्षा में इस प्रकार की गतिविधि करवाने से बच्चों को अपरम्परागत विकल्पों को खोजने में मदद मिलेगी और वे खुद को सशक्त भी महसूस करेंगे क्योंकि उन्होंने स्वयं वास्तविक दुनिया की समस्याओं का हल खोजा होगा।

शिक्षा प्रणाली में इन कमियों को पहचानने के बाद मेरे साथी राहुल और मैं इन्हें पाटने का प्रयोग कर रहे हैं। हमने आठ से बारह वर्ष की आयु के बीच के बच्चों के लिए डिजाइन थिंकिंग कार्यशालाओं का संचालन किया है। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य दोतरफा है; ये इन्हीं दो कमियों को दूर करने का प्रयास करती हैं। इन कार्यशालाओं के शुरू में बच्चों को डिजाइन के क्षेत्र से परिचित कराया जाता है और दुनिया भर में डिजाइन के जितने भी विषयों का अभ्यास किया जा रहा है, उनके प्रति जागरूक किया जाता है। एक बार जब वे डिजाइन को लेकर उत्साहित हो जाते हैं तब हम उन्हें यह महसूस कराते हैं कि ये सब तो वे स्वयं कर सकते हैं।

ये कार्यशालाएँ कुछ बनाने या ड्राइंग की बजाए सोचने पर जोर देती हैं। बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे एक ही समस्या को हल करने के लिए कई तरीकों के बारे में सोचें। उदाहरण के लिए एक मेज

डिजाइन करने का सरल–सा अभ्यास उन्हें विभिन्न तरीकों से मेज को स्थिर करने के बारे में सोचने का अवसर देता है। एक बार जब वे अपने विचारों को परिष्कृत कर लेते हैं तब उन्हें उसे निरूपित करना सिखाया जाता है लेकिन यह जरूरी नहीं कि यह निरूपण कुछ बनाकर या ड्राइंग के माध्यम से किया जाए। बच्चों को एक व्यापक रूपरेखा दे दी जाती है और इसी के भीतर उन्हें अपने रचनात्मक विचारों को आयोजित करना होता है। अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए उन्हें एक सन्दर्भ दिया जाता है; मापदण्डों और कार्यों की सूची दी जाती है जिसके अनुसार उन्हें अपना डिजाइन तैयार करना होता है।

यद्यपि इन कार्यशालाओं को आयोजित करने का हमारा अनुभव अभी सीमित है लेकिन इनके परिणामों से यह स्पष्ट है कि बच्चे इनके लिए तैयार हैं। वे अवधारणाओं को समझकर अपरम्परागत तरीके से सोचते हैं। वैसे तो हम अभी इन कार्यशालाओं को आयोजित करने के विभिन्न स्वरूपों और शैलियों के साथ प्रयोग कर रहे हैं लेकिन यह प्रयास अभी भी समुद्र में एक बूँद के समान है। अगर इसे प्रणालीगत स्तर पर लिया जाए और स्कूल के पाठ्यक्रम में डिजाइन थिंकिंग को शामिल करने का सचेत प्रयास किया जाए तो रचनात्मक रूप से सोचने का यह कौशल बच्चों को न केवल किसी भी पेशे के लिए तैयार करेगा बल्कि यह एक महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल भी साबित होगा।

करिश्मा और राहुल *दोनों नैशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद से औद्योगिक डिजाइन के स्नातक हैं। आठ साल के पेशेवर अनुभव के साथ, करिश्मा ने टाइटन इण्डस्ट्रीज में प्रॉडक्ट और रीटेल डिजाइनर के रूप में काम किया है। राहुल का पेशेवर अनुभव दस साल से भी अधिक का है और उनके करियर का बड़ा हिस्सा ह्यूमन फैक्टर्स इंटरनेशनल में निर्मित हुआ। सम्प्रति वे ट्विस्ट ओपन इनोवेशन्स नामक एक कम्पनी चलाते हैं जो डिजाइन सम्बन्धी नवाचारों के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्रदान करती है। ट्विस्ट ओपन करिश्मा और राहुल के समृद्ध एवं विविध अनुभवों से प्रेरित होकर डिजाइन थिंकिंग एवं डिजाइन प्रक्रियाओं का प्रतिपादक बनने का उद्देश्य रखता है। वे नियमित रूप से उन संगठनों के साथ सहयोग करते हैं जो चाहते हैं कि डिजाइन का उपयोग परम्परागत क्षेत्रों के परे भी विस्तारित रूप से किया जाए और इस दृष्टि से शिक्षा एक मुख्य क्षेत्र है। उनसे karishma@twistopen.in और rahul@twistopen.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*